शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

खोज के लिए संशय आवश्यक है

विनोबा

मैंने हिंदुस्तान में ऐसे भी ज्ञानी देखे हैं जो कहते हैं कि हमारे चित्त में कुछ भी असंतोष नहीं है, हमस ब कुछ पा चुके हैं, कृतार्थ हो चुके हैं। एक भाई ने कहा कि गांधीजी ज्ञान पाने की कोशिश कर रहे थे, साधकावस्था में ही मर गये। मैंने पूछा कि तुम किस पर से यह कहते हो ? तो उसने कहा कि, ''गांधीजी यही कहते रहे कि मेरी सत्य की खोज चल रही है, अभी पूरी नहीं हुई है सत्य मुझे अभी तक दीख नहीं रहा है। वे अंधेरे में रास्ता टटोल रहे थे, रास्ता ढूंढ रहे थे। वे सत्य-दर्शन से दूर थे। और मैं ऐसा हूं कि जिसे सत्यदर्शन हो चुका है।!''

मैंने इस देश में ऐसे कितने ही कृतात्मा देखे हैं, जिन्हें कोई संदेह या संशय है ही नहीं! ऐसों को देखकर मुझे गौतम का न्यायसूत्र याद आता है - प्रमाण-प्रमेय-प्रयोजन-संशय-दृष्टांत। ज्ञान कैसे होता है ? ज्ञान के लिए प्रमाण चाहिए, प्रमेय चाहिए, प्रयोजन चाहिए और संशय चाहिए। और ये ऐसे भले मनुष्य हैं जिन्हें संशय ही नहीं है गीता में जो कहा है कि संशयात्मा विनश्यति, वह संशय दूसरा है। यहां पर बौद्धिक संशय की बात की जा रही है, जो खोज के लिए जरूरी होता है। वैज्ञानिकों में वह संशय होता है। वे कहते हैं कि शायद यह भी सत्य हो सकता है और वह भी सत्य हो सकता है। मुझे एक मनुष्य मिला था जो नास्तिक था। उसने कहा कि ईश्वर है नहीं। मैंने पूछा कि जिसके बारे में 'है नहीं' कहा जाता है ऐसा कहने लायक जो ईश्वर है वह कौन है ? वह उत्तर नहीं दे सका। कुछ लोग कहते हैं कि साइंस कहता है ईश्वर है नहीं। लेकिन समझने की जरूरत है कि यह बात और किसी ने कही हो, लेकिन साइंस यह कभी नहीं कहेगा कि ईश्वर है नहीं। वह विषय साइंस की कक्षा के बाहर का है। इसलिए साइंस कहता है कि ईश्वर हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। वैज्ञानिक तटस्थ होता है, इसलिए उसके चित्त में संशय की गुंजाइश रहती है।

मैंने ऐसे नास्तिक देखे हैं जिनके चित्त में संशय की गुंजाईश ही नहीं है और ऐसे कृतकत्य भी देखे हैं, जिनमो कोई संशय ही नहीं है। संशय के लिए जिनती चेतना चाहिए, वह भी उनमें नहीं थी। ऐसे लोगों के मन में संशय कहां उठेगा ? कुछ लोगों में उस चेतना का अभाव रहता है। तमोगुण इतना बढ़ज़ है कि संशय भी नहीं रहता। हममें साइंटिफिक एटीट्यूड होना चाहिए। इसीलिए ईशावास्य कहता है कि तुम्हें ज्ञान की भी जरूरत है और अज्ञान की भी। अकेला ज्ञान और अकेला अज्ञान, दोनों अंधेरे में ले जाएंगे। दोनों रखने चाहिए लेकिन मर्यादा में रखने चाहिए। आत्मानुभव इन दोनों से भिन्न है, इतना ध्यान में रखना चहिए।

(विनोबा साहित्य खंड दो - वेदांत सुधा)